कामक्रोधादिभिर्हीना ये तत्र निवसन्ति वै।
अचिरेणैव कालेन ते सिद्धिं प्राप्नुवंति हि॥३८॥
जपहोमरताः शांता नियता ब्रह्मचारिणः।
वसन्ति तस्मिन्ये ते हि सिद्धिं प्राप्स्यंत्यभीप्सिताम्॥३९॥
दानहोमजपाद्यं च पितृदेवद्विजार्चनम्। अन्यस्मात्कोटिगुणितं भवेत्तस्मिन्फलं सति॥४०॥
इत्येतत्कथितं भद्रे गोकर्णक्षेत्रसंभवम्। माहात्म्यं सर्वपापघ्नं पठतां शृण्वतामपि॥४१॥

॥इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणोत्तरभागे वसुमोहिनीसंवादे गोकर्णमाहात्म्यं नाम चतुःसप्ततितमोऽध्यायः॥७४॥

॥इति गोकर्णमाहात्म्यम्॥

जो कोई मनुष्य काम-क्रोधादिरहित होकर यहां निवास करता है, उसे शीघ्र सिद्धिलाभ होता है। जो जपहोम निरत, शान्त, नैष्ठिक ब्रह्मचारी यहां रहते हैं, उनको त्वरित सिद्धिलाभ होता है। यहां दान-होम, पितृ-देव-द्विज पूजन करने से अन्य तीर्थों की तुलना में कोटि गुणित फल मिलता है। हे भद्रे! मैंने गोकर्ण का माहात्म्य कहा। इसके श्रवण किंवा पाठ से अखिल पातक नष्ट होते हैं॥३८-३९॥

॥७४वां अध्याय समाप्त॥

❖❖❖

पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः

लक्ष्मणाचल माहात्म्य का वर्णन

मोहिन्युवाच

श्रुतं गोकर्णमाहात्म्यं वसो पापविनाशनम्।
लक्ष्मणस्यापि माहात्म्यं वक्तुमर्हसि सांप्रतम्॥१॥

मोहिनी कहती है—मैंने आपकी कृपा से पापनाशक गोकर्ण माहात्म्य श्रवण किया। अब आप लक्ष्मणाचल माहात्म्य कहिये॥१॥

वसुरुवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि माहात्म्यं लक्ष्मणस्य च।
यं दृष्ट्वा मनुजो देवं मुच्यते सर्वपातकैः॥२॥
चतुर्व्यूहावतारे यो देवः सङ्कर्षणः स्वयम्। सर्वभूमण्डलं ह्येतत्सहस्रवदनः स्वराट्॥३॥

एकस्मिञ्छिरसि न्यस्तं नावैत्सिद्धार्थकोपमम्।
देवो नारायणः साक्षाद्रामो ब्रह्मादिवन्दितः॥४॥
प्रद्युम्नो भरतो भद्रे शत्रुघ्नो ह्यनिरुद्धकः। लक्ष्मणस्तु महाभागे स्वयं सङ्कर्षणः शिवः॥५॥
ब्रह्माद्यैः प्रार्थितः पूर्वं साक्षाद्देवो रमापतिः। रामादिनामभिर्जज्ञे चतुर्द्धा दिग्ग्रथान्नृपात्॥६॥

ब्राह्मण वसु कहते हैं—हे देवी! अब मैं लक्ष्मणाचल माहात्म्य कहता हूं। यह पापविनाशक है। इसका दर्शन करने मात्र से व्यक्ति सर्वपातकरहित हो जाता है। चतुर्व्यूहावतार में संकर्षण ही लक्ष्मण हैं। ये समस्त भूमण्डल को धारण करने वाले, सहस्त्रमुख एव स्वराट् हैं। ये अपने एक ही शिर पर समग्र पृथिवी के भार को श्वेत सरसों के तुल्य भी नहीं समझते। हे भद्रे! जो ब्रह्मादि देव वन्दित साक्षात् नारायण हैं, वे ही राम हैं। प्रद्युम्न ही भरत हैं। अनिरुद्ध ही शत्रुघ्न हैं। स्वयं संकर्षण ही शिव हैं। पूर्वकाल में ब्रह्मा प्रभृति की प्रार्थना के अनुसार विष्णु देव ही राजा दशरथ के पुत्र राम आदि का जन्म उक्त चारों रूप में हुआ था।।२-६।।

ततः कालांतरे देवि विश्वामित्रो मुनीश्वरः। यज्ञरक्षार्थमागत्यं प्रार्थदाम लक्ष्मणौ॥७॥
ततो राजा दशरथः प्राणेभ्योऽपि प्रियौ सुतौ।
मुनेः शापभयाद्भीती ददौ तौ रामलक्ष्मणौ॥८॥

हे देवी! कालान्तर में मुनीश्वर विश्वामित्र ने यज्ञरक्षार्थ आकर बलराम तथा लक्ष्मण को वहां से ले जाने हेतु प्रार्थना राजा से किया। तब राजा दशरथ ने प्राणों से भी प्रिय पुत्र को ब्रह्मशाप के भय के कारण भयभीत होकर प्रदान किया था। तब राजा दशरथ ने प्राणाधिक प्रियपुत्र राम-लक्ष्मण को मुनि के शाप भय से उन मुनि विश्वामित्र को प्रदान किया।।७-८।।

गत्वा यज्ञं मुनींद्रस्य गाधिपस्य ररक्षतुः। सताडकं सुबाहुं तु हत्वा प्रक्षिप्य दूरतः॥९॥
मारीचं मानवास्त्रेण विश्वामित्रमतोषयत्। ततः प्रीतान्मुनिश्रेष्ठादस्त्रग्राममवाप्य च॥१०॥
उवास स कियत्कालं सानुजस्तेन सत्कृतः। वैदेहनगरं नीतो विश्वामित्रेण तत्परम्॥११॥

तब वे दोनों भ्राता मुनि विश्वामित्र के यज्ञरक्षार्थ गये। वहां उन्होंने मानवास्त्र से ताड़का एवं सुबाहु का वध किया तथा बाण के आघात से मारीच को दूर फेंक दिया। इस प्रकार राम-लक्ष्मण ने ऋषि विश्वामित्र को प्रसन्न किया। इससे मुनि ने प्रसन्न होकर राम-लक्ष्मण को अनेक अस्त्र प्रदान किया था। तब रामचन्द्र ने वहां विश्वामित्र के आग्रह से भ्राता लक्ष्मण सहित कुछ दिन निवास भी किया। तत्पश्चात् राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ विदेह नगरी आये।।९-११।।

ततस्तु राजा जनको विश्वामित्रं सुसत्कृतम्।
पप्रच्छ बालकावेतौ कस्य क्षत्त्रकुलेशितुः॥१२॥
ततस्तस्मै मुनिवरो राज्ञो दशरथस्य तौ। पुत्रौ निवेदयामास भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥१३॥
ततो विदेहः सुप्रीतो दृष्ट्वा रामं च लक्ष्मणम्।
सीतोर्मिलाख्ययोः पुत्र्योश्चेतसाकल्पयत्पती॥१४॥

त्रिकालज्ञस्तु स मुनिर्ज्ञात्वा तस्य मनोगतम्।
मोदमानोऽथ जनकं प्राह दर्शय तद्धनुः॥१५॥
सीतास्वयंवरे न्यस्तं न्यासभूतं महेशितुः।
राजा श्रुत्वा तु तद्वाक्यं विश्वामित्रस्य सत्वरम्॥१६॥
भृत्यत्रिशत्यानाय्यास्मै दर्शयामास सादरम्। रामश्चंडीशचापं तद्वामदोष्णोद्धरन् क्षणात्॥१७॥

वहां राजा जनक ने विश्वामित्र का सत्कार किया। उन्होंने विश्वामित्र से प्रश्न किया कि ये दोनों बालक किस राजवंश के हैं? तब ऋषि विश्वामित्र ने कहा कि ये दोनों कुमार राजा दशरथ के पुत्र हैं। इससे विदेहराज अत्यन्त प्रसन्न हो गये। उन्होंने प्रीति के साथ राम-लक्ष्मण को देखा। वे इन दोनों भ्रातागण को अपनी कन्या सीता तथा उर्मिला का पति बनाने हेतु विचार करने लगे। यह देखकर उन त्रिकालज्ञ मुनि ने आनन्दित होकर राजा जनक से कहा—"आप इन भ्राताओं को शिव धनुष दिखलायें, जिनको आपने सीता के स्वयंम्बर हेतु शंकर से लेकर अमानत के तौर पर रखा है।" राजा विश्वामित्र का कथन सुनकर दशरथ ने शीघ्रता से तीस भृत्यों द्वारा धनुष मंगाकर आदर पूर्वक राम-लक्ष्मण को प्रदर्शित किया। राम ने उस चण्डीश शिव के धनुष को क्षणमात्र में हाथ से उठाया।१२-१७।।

सज्यं विकृष्य सहसा बभंजेक्षुमिवेभराट्।
ततोऽति मिथिलः प्रीतः स्वे कन्ये रामलक्ष्मणौ॥१८॥
समभ्यर्च्यार्पयामास ताभ्यां ते विधिपूर्वकम्।
ज्ञात्वा मुनिवरादन्यौ राज्ञो दशरथस्य तु॥१९॥
ताभ्यां सहतमाहूय भ्रातृव.्ये अदापयत्। ततः स कृतदारैस्तु चतुर्भिस्तनयैः सह॥२०॥
समर्चितो विदेहेनायोध्यां मुन्याज्ञया ययौ। मार्गे भृगुपतेर्दर्पं शमयित्वा स राघवः॥२१॥

जैसे हाथी गन्ने को तोड़ता है, तदनुरूप राम ने शिवधनु को वाम हाथ से उठाकर खींचा तश् भग्न कर दिया। इस कार्य से मिथिलेश ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ अपनी कन्या सीता का विवाह राम से तथा उर्मिला का विवाह लक्ष्मण से कर दिया। इस विवाहोपरान्त जनक को विश्वामित्र से यह ज्ञात हो गया कि राजा दशरथ के अन्य दो पुत्र हैं, तब राजा ने दशरथ के साथ उनको बुलाकर अपने भाई की कन्या से उनका विवाह कर दिया। तदनन्तर इन चारों विवाहित पुत्रों सहित सत्कृत होकर दशरथ विश्वामित्र के आदेश से अयोध्या चले गये। मार्ग में भृगु परशुराम का दर्प राघव ने चूर्ण किया।।१८-२१।।

पितृभ्रातृयुतः श्रीमान्मुमुदे बहुवत्सरान्। पंडितैस्तु वसिष्ठाद्यैर्बोधितोऽसौ निजं महः॥२२॥
ब्रह्माख्यं बुबुधे रामो मानुषत्वं विडम्बयन्। ततो दशरथो राजा ज्ञातज्ञेयं निजं सुतम्॥२३॥
रामं समुद्यतो हृष्टो यौवराज्येऽभिषेचितुम्।
यज्ज्ञात्वा कैकयी देवी राज्ञः प्रेष्ठा कनीयसी॥२४॥
सन्निवार्य हठात्तस्य पुत्रस्य तदरोचत। ततो रामो मुदे तस्याः पित्राननुमतो ययौ॥२५॥
सभार्यः स ससौमित्रिश्चित्रकूटं गिरिं शुभे। कियत्कालमुवासासौ तत्रैव मुनिवेषधृक्॥२६॥

तत्पश्चात् राघव ने पिता तथा भाईयों सहित नाना वर्ष पर्यन्त सुख का उपभोग किया था। विद्वान् वसिष्ठ द्वारा अपने माहात्म्य को सुनने के अनन्तर रामचन्द्र मनुष्यत्व को विडम्बना मानकर ब्रह्मत्व का अनुभव करने लगे। तब राजा दशरथ ने पुत्र राम को सर्वथा सर्वयोग्य मानकर उनका राज्याभिषेक करने का विचार किया। तब राजा की प्रिया कनिष्ठा रानी कैकेयी ने राजा को राज्याभिषेक से हठ पूर्वक निवारित किया था। हे शुभे! तदनन्तर राम ने कैकेयी की प्रसन्नता हेतु पितृ आज्ञा का पालन किया तथा सीता एवं लक्ष्मण सहित चित्रकूट पर्वत गमन किया। वहीं राम ने दीर्घकाल पर्यन्त मुनिवेषधारी होकर निवास भी किया।।२२-२६।।

मातामहगृहात्तच्च श्रुत्वाऽऽयातः पितुर्वधम्।
स विज्ञाय मृतं तातं हा रामेति विराविणम्॥२७॥
धिक्कृत्य कैकयीं यातो रामं स विनिवर्तितुम्।
ततः स्वपादुके दत्त्वा भरतं विनिवर्त्य च॥२८॥
रामोऽत्रेश्चाप्यगस्त्यस्य सुतीक्ष्णस्याश्रमेष्वगात्।
तेषु द्वादश वर्षाणि गमयित्वा रघूद्वहः॥२९॥
भार्यानुजान्वितः श्रीमांस्ततः पञ्चवटीमगात्। तत्रावसज्जनस्थाने त्रिशिरःखरदूषणान्॥३०॥

इधर भरत ने नाना के घर रहते अपने पिता के निधन का समाचार सुना। भरत "हा राम-हा राम" कहते अयोध्या आये तथा कैकेयी को धिक्कारने के उपरान्त राम को वापस लाने चित्रकूट प्रस्थान किया। परन्तु राम ने भरत को अपनी खड़ाऊं देकर वापस किया तथा स्वयं अत्रि, अगत्स्य, सुतीक्ष्ण के आश्रमों में रहते द्वादश वर्ष व्यतीत करने के उपरान्त भ्राता एवं भार्या के साथ पंचवटी में रहने लगे थे। वहीं पर जनस्थान में त्रिशिरा, खर तथा दूषण निवास करते थे।।२७-३०।।

शूर्पणख्या विकृतया प्रेरितान्स व्यनाशयत्। ततो रक्षःसहस्रैश्च चतुर्दशभिरागतान्॥३१॥
विचित्रवाजैर्नाराचैर्यमक्षयमनीनयत्। यच्छ्रुत्वा रक्षसां राजा मारीचं काञ्चनं मृगम्॥३२॥
दर्शयित्वापवाह्यौतौ सीतां हृत्वा जटायुषम्। रुंधानं मार्गमाहत्य लङ्कायां समुपानयत्॥३३॥
आगत्य तौ हृतां सीतां मार्गमाणौ समंततः।
दृष्ट्वा जटायुषं शांतं दग्ध्वा हत्वा कबन्धकम्॥३४॥
शबरीमनुकंप्याथ ऋष्यमूकमुपागतौ। ततस्तु हनुमद्वाक्यात्स्वसख्युः प्लवगेशितुः॥३५॥
विद्विषं वालिनं हत्वा सुग्रीवमकरोन्नृपम्।
तदाज्ञप्तास्तु ते कीशाः सर्वतः समुपागताः॥३६॥

उसी जनस्थान निवासकाल में राम ने विकृत हो गई शूर्पणखा से प्रेरित १४००० राक्षसों के साथ समागत त्रिशिरा, खर, दूषण का वध विचित्र पंखयुक्त बाणों से कर दिया। यह समाचार पाकर राक्षसराज रावण ने मारीच को स्वर्णमृग बनाया तथा राम ने उसे देखा। राम उस मृग का अनुसरण करते अपने आश्रम से दूर आ गये। तभी लंकेश ने सीताहरण किया तथा मार्ग में रोकने वाले जटायु का वध करके सीता को लंका ले गया। सीतान्वेषणरत राम, लक्ष्मण ने यत्र-तत्र सीता को खोजते मृत जटायु को जब देखा, तब उसका अग्नि

संस्कार करने के उपरान्त कबंध असुर को निहत किया। तदनन्तर शबरी पर कृपावर्षा करने के अनन्तर भ्रातद्वय ऋष्यमूक पर्वत आये। हनुमान के परामर्श से राम ने सखा सुग्रीव के शत्रु बाली का वध किया तथा सुग्रीव को राजा बना दिया। सुग्रीव की आज्ञानुसार सब वानर वहां एकत्र हो गये।।३१-३६।।

हनुमत्प्रमुखाः सीतां मार्गंतो दक्षिणोदधिम्।
प्राप्य संपातिवचनाल्लङ्कायां निश्चयं गताः॥३७॥
ततस्तु हनुमानेकः प्राप्य लङ्कां पुरीं कपिः। समुद्रस्य परे पारेऽपश्यद्रामप्रियां सतीम्॥३८॥
दत्त्वा रामांगुलीरत्नं विश्वासमुपपाद्य ताम्।
तयोः कुशलमाश्राव्य लब्ध्वा चूड़ामणिं ततः॥३९॥

तदनन्तर हनुमान प्रभृति वानर सीता की खोज करते हुये दक्षिण सागर तट पर पहुंचे। वहां पर सम्पाति के कथनानुसार उन लोगों को विश्वास हो गया कि सीता अवश्य लंका में हैं। हनुमान लंका चले गये। समुद्र पार जाने पर उन्होंने सती सीता का दर्शन किया। हनुमान ने राम की अंगूठी दिखलाकर सीता को अपने प्रति विश्वास दिलाया। तदनन्तर राम-लक्ष्मण का समाचार सीता से उन्होंने कहा। तदनन्तर अपने सीता दर्शन के प्रमाण स्वरूप हनुमान ने सीता की चूड़ामणि ग्रहण किया।।३७-३९।।

भङ्क्त्वा चाशोकवनिकां हत्वा चाक्षं ससैन्यकम्।
इन्द्रजिद्बंधनात्प्राप्य संभाष्यापि च रावणम्॥४०॥
दग्ध्वा लङ्कां पुरीं कृत्स्नां पुनर्दृष्ट्वा तु मैथिलीम्।
लब्धाज्ञोऽर्णवमुल्लंघ्य रामायैनांन्यवेदयत्॥४१॥

तत्पश्चात् हनुमान् ने अशोक वाटिका को नष्ट भ्रष्ट किया। सैन्य सहित अक्षय कुमार का वध कर दिया। मेघनाद ने जब हनुमान को आबद्ध कर लिया, तब उन्होंने रावण से वार्त्ता किया। तत्पश्चात् समस्त लंका को दग्ध करके पुनः जानकी के पास जाकर उनकी आज्ञा लेकर समुद्र लंघन किया। तत्पश्चात् उन्होंने राम के पास जाकर उनको सीता का समस्त समाचार सुनाया।।४०-४१।।

श्रुत्वा रामोऽपि तां सीतां राक्षसस्य निवासगात्।
सार्द्धं स कपिसैन्येन संप्राप्तो मकरालयम्॥४२॥
सागरानुमतेनासौ सेतुं बद्ध्वा महोदधौ। अद्रिकूटैः परं तीरं प्राप्य सेनां न्यवेशयत्॥४३॥
ततोऽसौ रावणो भ्राता बोधितोऽपि कनीयसा।
प्रदानं तत्र मैथिल्यास्तद्भर्त्रे न त्वरोचयत्॥४४॥
पदा हतस्ततस्तेन रावणेन विभीषणः। संप्राप्तः शरणं रामं रामो लङ्कामुपारुणत्॥४५॥

जब राम ने यह सुना कि सीता राक्षसों के यहा हैं, तब वे कपि सैन्य सहित सागर तट पर आये और सागर की अनुमति से उन्होंने सागर पर सेतु बनाया। तब उन्होंने अपने सैन्य को अद्रिकूट पर्वत के पास उस पार उतारा। यह समाचार सुनकर रावण के कनिष्ठ भ्राता ने रावण से कहा कि आप मैथिली को वापस राम के यहां भेजो, परन्तु रावण को यह प्रस्ताव रुचिकर नहीं लगा अपितु उसने विभीषण पर पदाघात तक

कर दिया। इस कारण विभीषण ने राम की शरण ग्रहण किया और राम ने लंकापुरी को सैन्य द्वारा घेर लिया।।४२-४५।।

ततस्तु मंत्रिणोऽमात्याः पुत्रा भृत्याः प्रचोदिताः।
युद्धाय ते क्षयं नीतास्ताभ्यां संख्ये कपीश्वरैः॥४६॥
लक्ष्मणः शक्रजेतारं जघ्निवान्निशितैः शरैः। रामोऽपि कुम्भश्रवणं रावणं चाप्यजीघनत्॥४७॥
विभीषणेन तत्कृत्यं कारयित्वा निजां प्रियाम्।
वह्नौ संशोध्य दत्त्वास्मै रामो रक्षोगणेशताम्॥४८॥
लङ्कामायुश्च कल्पांतं ययौ चीर्णव्रतः पुरीम्। पुष्पकेण विमानेन ससुग्रीवविभीषणः॥४९॥
नन्दिग्रामस्थभरतं नीत्वायोध्यां समाविशत्।
मातृः प्रणम्य ताः सर्वा भ्रातरस्ते पुरोधसा॥५०॥
वसिष्ठेनानुविज्ञाप्य रामं राज्येऽभ्यषेचयन्। ततो रामोऽपि भगवान्प्रजाः शासन्निवौरसान्॥५१॥

तदनन्तर रावण के मन्त्री, भृत्य पुत्र सभी लोग उस संग्राम में राम-लक्ष्मण तथा कपीश्वरों द्वारा निहत कर दिये गये। लक्ष्मण ने इन्द्रजित् को तीक्ष्ण बाणों से धराशायी कर दिया। राम ने भी कुंभकर्ण तथा रावण का वध कर दिया। विभीषण ने अपने कुल के मृत लोगों का अग्नि संस्कार राम की आज्ञा से सम्पन्न किया। राम ने सीता को अग्नि द्वारा शुद्ध करके विभीषण को लंकाधिपति तथा कल्पान्त पर्यन्त के लिये चिरंजीवी बनाया। तदनन्तर श्रीराम पुष्पक विमान पर सुग्रीव, विभीषणादि सहित नंदीग्राम आये तथा वहां से भरत को लेकर उन्होंने अयोध्या में प्रवेश किया। वहां सभी भ्राताओं ने माताओं को प्रणाम किया। वहां वसिष्ठ के आदेश से राम का राज्याभिषेक सम्पन्न किया गया। राम भी प्रजा का पालन पुत्रवत् करने लगे।।४६-५१।।

लोकापवादात्संत्रस्तः सीतां तत्याज धर्मवित्।
सा तु संप्राप्य वाल्मीकेराश्रमं न्यवसत्सुखम्॥५२॥
पुत्रौ च सुषुवे तत्र नाम्ना ख्यातौ कुशीलवौ।
वाल्मीकिस्तु तयोः कृत्वा यथा समुदिताः क्रियाः॥५३॥
रामायणं विरच्यैतावध्यापयदुदारधीः। तौ गायमानौ सत्रेषु मुनीनां ख्यातिमागतौ॥५४॥

लोकापवाद से संत्रस्त धर्मज्ञ राम ने सीता का त्याग किया। वे वाल्मीकि आश्रम में सुख पूर्वक निवास करने लगी। वहां सीता ने प्रख्यात पुत्र लव-कुश को जन्म दिया। वहां वाल्मीकि ऋषि ने उन बालकद्वय का समस्त संस्कार किया। उदार बुद्धि वाल्मीकि ने उन बालकों को स्वरचित रामायण का अध्ययन कराया। वे मुनिगण के यज्ञों में रामायण गायन करते हुये प्रख्यात हो गये।।५२-५४।।

यज्ञे रामस्य संप्राप्तौ वाजिमेधे प्रवर्तिते। तत्र ताभ्यां तु तद्गीतं स्वचरित्रं प्रसन्नधीः॥५५॥
मुनिमाकारयामास ससीतं तत्र संसदि। सा तु रामाय तौ पुत्रौ निवेद्य जगतीजनिः॥५६॥
जगत्या विवरं भूयो विवेशासीत्तदद्भुतम्। ततः परं ब्रह्मचर्यं यज्ञमेव त्रयोदश॥५७॥

सहस्राब्दान्प्रकुर्वाणस्तस्थौ भुवि रघूत्तमः।
ततस्तु काले दुर्वासाः संप्राप्तो राघवं प्रति॥५८॥
ब्रह्मणा प्रेषितो भद्रे वैकुण्ठगमनाय च।
स एकांतगतो रामं प्राह कोऽपीह नाऽऽव्रजेत्॥५९॥
आगतो वध्यतां यातु रामस्तत्प्रतिजज्ञिवान्। स लक्ष्मणं समाहूय प्रोवाच रघुनन्दनः॥६०॥

राम के अश्वमेध यज्ञ में लव-कुश ने रामायण का गायन किया था। स्वचरित्र का गायन सुनकर सीता तथा वाल्मीकि को राम ने यज्ञ में आमन्त्रित किया। लेकिन जगत् जननी भगवती सीता ने राम के हाथों पुत्रद्वय को प्रदान किया तथा वे स्वयं भूविवर में प्रविष्ट हो गयीं। यह महान् आश्चर्य घटना घटित हुई थी। तदनन्तर राम ने ब्रह्मचर्य यज्ञ का पालन करते हुये त्रयोदश सहस्र वर्ष पर्यन्त पृथिवी पर निवास किया था। तत्पश्चात् काल ने राम के निकट आगमन किया जिसे ब्रह्मा ने भेजा था। काल वहां राम से वैकुण्ठ गमनार्थ निवेदन करने आया था। उसने राम से कहा—"यहां आपसे वार्त्ताकाल में अन्य कोई आगमन न करे। यदि कोई आये, तब आप उसका वध करें।" इस पर राम ने 'ऐसा ही हो' कहकर लक्ष्मण को आदेश दिया।।५५-६०।।

द्वारि तिष्ठात्र निर्विष्टो वध्यतां मे प्रयास्यति।
स तथेति प्रतिज्ञाय रामस्याज्ञां समाचरन्॥६१॥
प्रवेशनं न कस्यापि प्रददौ रामसन्निधौ। एवमेकांतगं रामं कालसंविदमास्थितम्॥६२॥
ज्ञात्वाथ द्वारि दुर्वासा लक्ष्मणं समुपागमत्।
तमागतं तु संप्रेक्ष्य सौमित्रिः प्रणिपत्य च॥६३॥
मुहूर्तं पालयेत्याह मंत्रव्यग्रोऽस्ति राघवः।
दुर्वासास्तद्वचः श्रुत्वा कालस्यार्थविधायकः॥६४॥
क्रुद्धः प्रोवाच सौमित्रिं देहि मेऽन्तःप्रवेशनम्।
नो चेत्त्वां भस्मसात्सद्यः करिष्यामि विचारय॥६५॥

रघुनन्दन कहते हैं—हे लक्ष्मण! तुम द्वार पर रहना। जो कोई यहां आने का प्रयत्न करे उसका वध करना। लक्ष्मण ने रामाज्ञा का पालन करते हुये वहां किसी को आने नहीं दिया। जब दुर्वासा ऋषि को ज्ञात हुआ कि राम काल के साथ एकान्तस्थ हैं, तब वे द्वार पर लक्ष्मण के पास आये। सौमित्र लक्ष्मण ने उनको प्रणाम करके कहा—"आप कुछ क्षण प्रतीक्षा करें। राम अभी गुप्त मन्त्रणा कर रहे हैं।" तब काल के कार्य को सिद्ध करने हेतु दुर्वासा क्रोधित हो गये। उन्होंने कहा—"तुम मुझे अन्दर जाने दो। अन्यथा तुमको अभी भस्मीभूत कर दूंगा।"।।६१-६५।।

वचो दुर्वाससः श्रुत्वा लक्ष्मणो जातसंभ्रमः। मुनेर्भीतो विवेशांतर्विज्ञापयितुमग्रजम्॥६६॥
दृष्ट्वा तु लक्ष्मणं काल उत्थाय कृतमंत्रकः।
प्रतिज्ञां पालयेत्युक्त्वा ययौ रामविसर्ज्जितः॥६७॥

ततो निष्क्रम्य भगवान्रामो धर्मभृतां वरः। प्रतोष्य तं मुनिं प्रीतो दुर्वाससमभोजयत्॥६८॥

दुर्वासा का वचन सुनकर लक्ष्मण भ्रमित हो गये। उन्होंने मुनि से भयभीत होकर यह संवाद भाई को देने हेतु कक्ष में प्रवेश किया। लक्ष्मण को प्रविष्ट देखकर काल ने वार्तालाप समाप्त किया तथा उठते हुये राम से कहा—"आप प्रतिज्ञा पालन करें।" उसके पश्चात् धर्मज्ञप्रवर राम ने प्रेम पूर्वक दुर्वासा को प्रसन्न किया तथा उनको भोजन प्रदान किया।।६६-६८।।

भोजयित्वा प्रणम्यैनं विसृज्य प्राह लक्ष्मणम्।
भ्रातर्लक्ष्मण संप्राप्तं सङ्कटं धर्मकारणात्॥६९॥
यत्त्वं मे वध्यतां प्राप्तो दैवं हि बलवत्तरम्।
मया त्यक्तस्ततो वीर यथेच्छं गच्छ सांप्रतम्॥७०॥

भोजन कराने के पश्चात् राम ने प्रणाम निवेदन पूर्वक दुर्वासा को विदा करके लक्ष्मण से कहा—"भ्राता लक्ष्मण! यह धर्मसंकट की घड़ी है। अब तुम मेरे द्वारा वध्य हो। दैव अत्यन्त बली है। हे वीर! मैं तुम्हारा त्याग करता हूं। यथेच्छ स्थान पर जाओ।"।।६९-७०।।

ततः प्रणम्य तं रामं सत्यधर्मे व्यवस्थितम्। दक्षिणां दिशमाश्रित्य तपश्चक्रे नगोपरि॥७१॥

लक्ष्मण ने उस समय सत्य-धर्म स्थित राम को प्रणाम किया। तत्पश्चात् वे दक्षिण दिशा में जाकर पर्वत पर तपःश्चरणरत हो गये।।७१।।

ततो रामोऽपि भगवान्ब्रह्मप्रार्थनया पुनः।
स्वधामाविशदव्यग्रः ससाकेतः सकोशलः॥७२॥
गोप्रतारे सरय्वां ये रामं संचिंत्य संप्लुताः।
ते रामधाम विविशुर्दिव्यांगा योगिदुर्लभम्॥७३॥
लक्ष्मणस्तु कियत्कालं तपोयोगबलान्वितः। रामानुगमनेनैव स्वधामाविशदव्ययम्॥७४॥
सान्निध्यं पर्वते तस्मिन्दत्त्वा सौमित्रिरन्वहम्।
चक्रे निजाधिकारं स ततस्तत्क्षेत्रमुत्तमम्॥७५॥

उधर श्रीराम ने भी ब्रह्मा की प्रार्थना के कारण समस्त अयोध्यावासीगण सहित उनको प्रणाम किया तथा हर्षयुक्त होकर स्वधाम गमन किया। जो मनुष्य सरयू के गोप्रतार तट पर राम का स्मरण करते स्नान करते हैं, वे दिव्यदेहधारी होकर योगीगण दुर्लभ वैकुण्ठ लोक गमन करते हैं। लक्ष्मण भी पर्वत पर तप करने के कुछ काल पश्चात् राम का ही अनुगमन करते अपने अविनाशी धाम चले गये। वह पर्वत जहां लक्ष्मण नित्य तप करते थे, उत्तम क्षेत्र कहा गया है।।७२-७५।।

ये पश्यन्ति नरा भक्त्या लक्ष्मणं लक्ष्मणाचले।
ते कृतार्था न संदेहो गच्छंति हरिमंदिरम्॥७६॥
तत्र दानं प्रशंसन्ति स्वर्णगोभूमिवाजिनाम्। दत्तं तत्राक्षयं सर्वं हुतं जप्तं कृतं तथा॥७७॥

बहुना किमिहोक्तेन दर्शनं तस्य दुर्लभम्। अगस्त्याज्ञांतरा देवि दृष्टे मुक्तिर्न संशयः॥७८॥
एतद्रामचरित्रं तु लक्ष्मणाख्यानसंयुतम्। श्रावयेद्योऽपि शृणुयात्स्यातां तौ रामवल्लभौ॥७९॥

।।इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणोत्तरभागे बृहदुपाख्याने उत्तरभागे वसुमोहिनीसंवादे रामलक्ष्मणचरित्र सहितलक्ष्मणाचलमाहात्म्यं नाम पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः।।७५।।

।।इति लक्ष्मणाचलमाहात्म्यम्।।

जो मनुष्य लक्ष्मणगिरि पर भक्तिभावेन लक्ष्मण दर्शन करते हैं, वे कृतार्थ होकर विष्णुलोक जाते हैं। यह निःसंशय है। वहां जो स्वर्ण, गौ, भूमि तथा अश्व का दान करता है, वह अक्षयफल लाभ करता है। किम्बहुना यह तीर्थ दर्शन अत्यन्त दुर्लभ है। हे देवी! यह अगत्स्य दर्शन मुक्तिप्रद है। जो इस लक्ष्मणाख्यान समन्वित रामचरित का श्रवण करेगा किंवा अन्य को श्रवण करायेगा, वे दोनों प्रकार के व्यक्ति राम को प्रिय होंगे।।७६-७९।।

॥७५वां अध्याय समाप्त॥

❖❖❖

षटसप्ततितमोऽध्यायः

सेतु माहात्म्य

मोहिन्युवाच

साधु साधु द्विजश्रेष्ठ यन्मे रामायणं त्वया। श्रावितं सर्वपापघ्नं नृणां पुण्यविवर्द्धनम्॥१॥
अधुना श्रोतुमिच्छामि सेतुमाहात्म्यमुत्तमम्।

मोहिनी कहती है—हे द्विजप्रवर! साधु, साधु! आपने सर्वपापघ्न तथा मनुष्यों के पुण्य का वर्द्धन करने वाली रामायण को सुनाया। अब कृपया मुझे सेतु का उत्तम माहात्म्य सुनायें।।१।।

वसुरुवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सेतुमाहात्म्यमुत्तमम्॥२॥
यं दृष्ट्वा मनुजो देवि मुच्यते भवसागरात्। सेतोः संदर्शनं पुण्यं यत्र रामेश्वरो विभुः॥३॥
दर्शनादेव मर्त्यानाममरत्वं प्रयच्छति। रामेश्वरं तु सम्पूज्य नरो नियतमानसः॥४॥
सर्वाः समश्नुते भूतीर्नात्र कार्या विचारणा। चक्रतीर्थमिहान्यच्च वर्तते पापनाशनम्॥५॥
स्नानं दानं जपो होमस्तत्रानंत्यं विगाहते। तालतीर्थं तु संप्राप्य यः स्नायात्तत्र मानवः॥६॥
स उत्तमां जनिं लब्ध्वा मोदते देववद्भुवि। ततः संप्राप्य सुभगे तीर्थं पापविनाशनम्॥७॥